# Kharif POP: Groundnut

Download

- Read report on Groundnut Cultivation

# Read report on Groundnut Cultivation

खरीफ पी.ओ.पी.

**25** डिसमिल जमीन के लिए

- भारत में मूँगफली मुख्यतः तिलहन फसल के रूप में किया जाता है, तथा इसकी फलियां ग्रामीण झारखंड में सीधे खाने में भी इस्तेमाल किया जाता है।
- मूँगफली झारखंड के टांड़ जमीन में बरसात के मौसम में किया जाने वाला एक नगदी फसल है।

खेती करने का उचित समय:

झारखंड में मूँगफली के बुआई का उचित समय 15 जून से 10 जुलाई तक है। प्रायः मानसून की पहली बारिश में इसकी बुआई करना अच्छी मानी जाती है|

जमीन का चुनाव:

- मूंगफली के लिए झारखंड की टांड़-1 जमीन एवं बाड़ी जमीन सबसे उपयुक्त माना जाता है|
- रेतीली दोमट मिट्टी मूंगफली के खेती के लिए उपयुक्त होती है।
- जल निकासी की उचित व्यवस्था वाली जमीन में ही मूँगफली की खेती करनी चाहिए।

मूंगफली की फसल का उत्पादन हेतु महत्वपूर्ण कदम:

- बीज़ का चुनाव
    - अच्छी उपज के लिए मूँगफली की उन्नत बीज़ का चुनाव करना चाहिए और हर तीसरे वर्ष में बीज को बदल देना चाहिए | यह बदलाव दूसरे किसान के साथ अदल-बदल कर किया जा सकता है|
    - पुष्ट और समान आकार (एकरूपता) वाले बीज़ का चुनाव करना चाहिए|
- बीज़ की छँटाई, उपचार करना

फोटो : मूँगफली के लिए खेत की जुताई

फोटो : **मार्कर द्वारा लाइन बनाना और बीज़ को सुनिश्चित दूरी पर लगाना**

खाद/उर्वरक का प्रयोग:

अरहर की अच्छी फसल के लिए गोबर खाद के अतिरिक्त 50 kg घनजीवामृत को अंततम जुताई से पहि खेत में समान रूप से डाल देना चाहिए ।

निकाई – गुड़ाई :

- बुआई के 20-25 दिनों के बाद फसल की पहली निकाई-गुड़ाई कर मिट्टी चढ़ाना चाहिए (फैलने वाली किस्म लगाने पर उसके फैलाव वाले ताने को भी मिट्टी से ढँक देना चाहिए) और दूसरी निकाई-गुड़ाई आवश्यकतानुसार करनी चाहिए।
- सावधानी :- 30 दिनों के बाद निकाई गुड़ाई करने से फलियों को नुकसान होने की संभावना होती है अतः पहली निकाई-गुड़ाई समय पर ही करना चाहिए |

फोटो : निकाई-गुड़ाई

**रोग प्रबंधन:**

<table>
<tr><th></th><th></th><th></th></tr>
<tr><td>टिक्का रोग<br> </td><td>• यह बीमारी फफूंद के कारण होता है।<br>• इस बीमारी में गोलाकार कत्थई रंग का गहरा धब्बा पत्तियों एवं तने में दिखाई देती है । बीमारी ज्यादा होने से पौधा का सब पत्ता गिर जाता है एवं सिर्फ तना बच जाता है।</td><td rowspan="2">• बीज का उपचार करने से भी इस रोग को नियंत्रित रखा जा सकता है|<br>• मठास्त्र 1 लीटर प्रति 20 लीटर पानी में मिलाकर 10 दिन अंतराल में छिडकाव करना है |<br>• अगले वर्ष मूंगफली की फसल को इस बीमारी से बचाने के लिए मूंगफली की फसल अवशेषों को एकत्र करके जल्द से जल्द जला देना चाहिए।<br>• इस रोग से बचाव के लिए खेत की ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई करनी भी लाभदायक होती है।</td></tr>
<tr><td>जड़ का सड़न रोग (Root Rot)<br> </td><td>• इस रोग के प्रभाव से मिट्टी से सटे पौधे के तने का भाग सूखने लगता है, जड़ों के पास मकड़ी की जालें जैसी सफ़ेद रचना</td></tr>
</table>

| | | |
|---|---|---|
| | दिखाई पड़ती है, पौधे पीले पड़ने लगते हैं, प्रभावित फयों में दाने सिकुडे हुए या पूरी तरह से सड़ जाते है। | |

कीट प्रबंधन:

| | | |
|---|---|---|
| भुआ पिल्लू : | यह कीट 40 से 45 दिनों की फसल में आता है। यह कीट पौधो के पत्तो को खाकर जालीदार बना देता है जिससे फसल को भारी नुकसान होता है। | अग्नेअस्त्र या ब्रम्हास्त्र या हांडीकाथ का छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर 25 मिली प्रति लीटर पानी में मिला कर 2 बार छिड़काव करना चाहिए। |
| तना-छेदक | तना छेदक किट तने में छेद कर देता है जिससे मूंगफली की फलियों में दाने नहीं भरती हैं। | अग्नेअस्त्र या ब्रम्हास्त्र या हांडीकाथ का छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर 25 मिली प्रति लीटर पानी में मिला कर 2 बार छिड़काव करना चाहिए। |

| | | |
|---|---|---|
| दीमक का प्रकोप | जमीन में नमी की कमी होने से दीमक का प्रकोप शुरू होता है जो फसल को बहुत नुकसान पहुंचा सकता है। | निकाई गुड़ाई कर मिट्टी नहीं चढ़ाने से भी दीमक का प्रकोप होता है |

सिचाई प्रबंधन:

मूंगफली खरीफ के समय झारखंड में होती है इसलिए सिचाई की आवश्यकता नहीं होती है |

औसत उपज:

औसत उपज (झारखंड) – 1.05 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर।

औसत उपज (इंडिया) - 1.32 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर।

संभावित उपज –

| किस्म | अनुमानित उपज (किलो प्रति 25 डिसमिल) |
|---|---|
| धरणी | 225 |
| K- 6 | 325 |

विशेष बातें

- अप्रैल से मई महीने में खेत की गरमा जुताई 6 इंच गहराई तक करनी चाहिए |
- खेत को जुताई एक बार उत्तर से दक्षिण और दूसरी बार पूर्व से पश्चिम दिशा में करनी चाहिए | इससे मिट्टी जनित बीमारियों का प्रकोप की संभावना घटती है | इससे मिट्टी हल्की होती है और वर्षा का पानी जमीन में ज्यादा रिसता है |